



DSSSB TGT & PGT



Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

सन्धि (व्यंजन सन्धि)

Part -2



LIVE 30-03-2024 05:00 PM



DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH



अथ हल्सन्धिः

श्चुत्वविधायकं विधिसूत्रम्

६२.

स्तोः श्चुना श्चुः ८।४।४० ॥

स/तवर्ग + श/चवर्ग = श/चवर्ग

सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः ।

रामश्शेते । रामश्चिनोति । सच्चित् । शार्ङ्गिञ्जय ।।

सकार और तवर्ग के स्थान पर शकार और चवर्ग का योग होने पर शकार और चवर्ग आदेश होते हैं ।



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



चुत्वनिषेधकं विधिसूत्रम्

६३.

शात् ८/४/४४ ॥

शैवर्ण + तवर्ण = य

शात्परस्य तवर्गस्य चुत्वं न स्यात् । विश्रः प्रश्नः ।

तालव्य शकार से परे तवर्ग को चुत्व नहीं होता है।

यह सूत्र स्तोः श्चुना श्चुः इस सूत्र का निषेधक सूत्र है, जो तालव्य शकार से परे तवर्ग के चुत्व का निषेध करता है। इस तरह शकार से परे तवर्ग का श्चुत्व नहीं होता है किन्तु चवर्ग से परे तवर्ग का चुत्व हो जाता है।



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



विश्रः । गमन । विश् + नः इस स्थिति में शकार से परे नकार के स्थान पर स्तोः श्चुना श्चुः से श्चुत्व प्राप्त था तो शात् ने शकार से परे होने के कारण निषेध कर दिया, विश्रः ही रह गया। यदि चुत्व हो जाता तो विश्रजः ऐसा अनिष्ट रूप बन जाता।

प्रश्नः । सवाल । प्रश् + नः इस स्थिति में शकार से परे नकार के स्थान पर स्तोः श्चुना श्चुः से श्चुत्व प्राप्त था तो शात् ने शकार से परे होने के कारण निषेध कर दिया, प्रश्नः ही रह गया। यदि चुत्व हो जाता तो प्रश्नजः ऐसा अनिष्ट रूप बन जाता।



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



ष्टुत्वविधायकं विधिसूत्रम्

६४.

स्तोः ष्टुना ष्टुः १८ १४/४१ ॥

स् / तवर्ग + ष् / टवर्ग = ष्टु / टवर्ग

स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्यात् ।

रामष्ष्टुः । रामष्टीकते । पेष्टा । तट्टीका । चक्रिण्डौकसे ॥

दन्त्य सकार और तवर्ग के स्थान पर मूर्धन्य षकार और टवर्ग का योग होने पर मूर्धन्य षकार और टवर्ग आदेश होते हैं।



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



षट्त्वनिषेधकं विधिसूत्रम्

६५. न पदान्ताद्वोरनाम् ८।४।४२॥

न पदान्तात् टोः अनाम् स्तोः

पदान्त ट + स्तो / तवर्ग = षट् / तवर्ग
निषेध

पदान्ताद्वर्गात् परस्यानामः स्तोः षट् न स्यात् ।

षट् सन्तः। षट् ते। पदान्तात् किम् ? ईद्वे टोः किम् ? सर्पिष्टमम्।

षट्त्वनिषेध

वार्तिकम्- अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम्। षण्णाम्। षण्णवतिः। षण्णगर्यः।

ईड् (धातु)
 ↓
 (ईट्) + (ते) (निङ्)
 पढ़ नहीं है = ईट्टे
 लुप्तव संभे होगी

② सापिष् + तुमम् = सापिषटमम्

पदान्त इ + से/तर्का = अङ्गः न
 प/तर्का निपेक्ष

पर + सन्तः = परसन्तः

पर + ते = परते

पर + नाम् = पर नाम्

त ठ ड ढ ण

पर्या
 पणाम

अङ्गः
 अ ण न म

(यरोडनुनासिकेडनुनासिको वा)

पदान्त पर + अनुनासिक = अनुनासिक
 को सभी व्यंजन को डकर

पर + जवति

पर जवति (१६)

इ. भ. (७) न. मं

पुपुजवति

स्थानी: स त थ द ध (न)

आदेश: ष त ठ ड ढ ण

पर + अनुनासिक

ਪਰ + ਜਾਗਰਿ:

ਜਾਗਰਿ

= ਪਰ ਜਾਗਰਿ

= ਪਰਜਾਗਰਿ:



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



६५ - न पदान्ताद्वोरनाम्। न अव्ययपदं, पदान्तात् पञ्चम्यन्तं, टोः पञ्चम्यन्तम्, अनाम् लुप्तषष्ठीकं पदम्, अनेकपदमिदं सूत्रम् । स्तोः श्चुना श्चुः से स्तो; और ष्टुना ष्टुः से ष्टुः की अनुवृत्ति आती है।

पदान्त टवर्ग से परे नाम् के नकार को छोड़कर अन्य तवर्ग एवं सकार को ष्टुत्व नहीं होता है।

नवार्ति, नगरी



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



ष्टुत्वनिषेधकं विध्यन्तर्गतं निषेधसूत्रम्

६६.

तोः षि ८।४।४३॥.॥ ३४४४६

न ष्टुत्वम्। सन्धः।

त वर्ग + ष् = ष्ट/ट वर्ग निषेध
(तश्च दृष्टं न)

सन् + पठः = सन्धः

अनाम्रवतिनगरीणामिति वाच्यम्। यह वार्तिक है। पदान्त टवर्ग से परे नाम्, नवति और नगरी शब्दों के नकार को छोड़कर अन्य सकार और तवर्ग को ष्टुत्व न हो, ऐसा कहना चाहिए।



DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH



जश्त्वविधायकं विधिसूत्रम्

जश् (ज् ब् ग् इ द्)

६७. झलां जशोऽन्ते ८।२।३९॥

पदान्ते झलां जशः स्युः । वागीशः ।

पदान्ते झल = जश्

(१, २, ३, ४) + झल

झल + झष = जश्
(१, २, ३, ४) (३, ४)

६७ - झलां जशोऽन्ते । झलां षष्ठ्यन्तं, जशः प्रथमान्तम्, अन्ते सप्तम्यन्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम् । पदस्य सूत्र का अधिकार आ रहा है । अतः पद के अन्त में यह अर्थ हुआ ।

पद के अन्त में विद्यमान झल् के स्थान पर जश् आदेश होता है ।

पदान्त अक्षर (1, 2, 3, 4 + 3^{वां} वर्ण)

= 5^{वां} (वर्ण का तीसरा वर्ण)

जो ब ग ह द

1
क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, न, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह

2
क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, न, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह

3^{वां}

श, ष, स, ह

क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, न, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह

- ① वाक् + ईशः = वागीशः
- ② अन् + अन्तः = अजन्तः
- ③ जागृत् + ईशः = जागृतीशः
- ④ सुप् + अन्तः = सुवन्तः
- ⑤ कुह् + धाम् = कुप्यम्
- जशः



DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH



अनुनासिकादेशविधायकं विधिसूत्रम्

६८.

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ८४४०४५ ॥

यरः पदान्तस्यानुनासिके परेऽनुनासिको वा स्यात् ।

एतन्मुरारिः, एतद् मुरारिः ।

उपसर्ग

वार्तिकम्- प्रत्यये भाषायां नित्यम् । तन्मात्रम् । चिन्मयम् ।

तन् + मात्रम् = तन्मात्रम्

चित् + मयम् = चिन्मयम्

यर + अनुनासिकं = अनुनासिकं
(हि को दोः ०५२५०) (इ. अ. ०५२५०)

उदा. एतत् + मुरारि
एतन्मुरारि

एतद् मुरारि



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



६८- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा । यरः षष्ठ्यन्तम्, अनुनासिके सप्तम्यन्तम्, अनुनासिकः प्रथमान्तं, वा अव्ययपदम्, अनेकपदमिदं सूत्रम् । पदस्य सूत्र का अधिकार आ रहा है।

अनुनासिक के पर में रहते पदान्त यर के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

प्रत्यये भाषायां नित्यम् । यह वार्तिक है। अनुनासिक वर्ण आदि में हो ऐसे प्रत्यय के परे होने पर लौकिक प्रयोगों में पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।



DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH



परसवर्णविधायकं विधिसूत्रम्

लकारे

६९.

तोलि ८।४।६० ॥

त वार् + ल् = ल्
त श् द् धां न्

तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णः।

तल्लयः। विद्वाल्लिखति। नस्यानुनासिको लः।

तल् + लथः विद्वान् + लिखति = विद्वान् लिखति

तल्लथः



DSSSB TGT & PGT **संस्कृत** SCHOLAR BATCH



६९ - तोर्लि । तोः षष्ठ्यन्तं, लि सप्तम्यन्तं द्विपदमिदं सूत्रम् । अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः से परसवर्णः की अनुवृत्ति आती है।

लकार के परे होने पर तवर्ग के स्थान पर परसवर्ण आदेश होता है।